P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-1* September- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

राजस्थान की जनजातियों का भौगोलिक अध्ययन (प्रतापगढ़ जिले के विशेष संदर्भ में)

धर्मेन्द्र कुमार खटीक
शोधार्थी,
भूगोल विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान

सारांश

राजस्थान भारत के 6 जनजाति बहुल राज्यों में से एक हैं यहां मुख्यतः भील, मीणा, गरासिया, सहरिया, डामोर कथौडी, व कुछ अन्य जनजातियों के लोग निवास करते है। राज्य का समूचा दक्षिणी पहाड़ी क्षेत्र जनजाति बहुल क्षेत्र है। इस क्षेत्र में बांसवाडा, प्रतापगढ़, डूँगरपुर, उदयपुर, चितौड़गढ एवं सिरोही जिले के आबू – पिण्डवाडा क्षेत्र तथा भीलवाड़ा का दक्षिणी भाग सम्मिलित हैं जो अरावली पर्वत श्रृंखला के अंतर्गत आते है। पूर्व में राजस्थान की अनेक रियासतें मीणा एवं भील लोगों के नियंत्रण में थी। बांसवाडा के कुशलगढ नाम से ये स्थान आबाद हुए। इसी प्रकार जयपुर, अजमेर शाहपुरा, अलवर, टोंक एवं बूंदी के वर्तमान क्षेत्रों के शासक मीणा लोग ही थे। संविधान के अनुच्छेद 366 (25) में अनुसूचित जनजातियां अधिसूचित की जाती है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 341 में जनजातियां पाई जाती है। लेकिन इनमें मीणा भील, गरासिया, सहरिया, कथौडी, डामोर आदि मुख्य है। राजस्थान अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति अधिनियम 1976 के अनुसार अनुसूचित जनजतियों की सूची निम्न है।

1. मीना।
2. भील मीना।
3. पटेलिया।
4. भील, भील गरासिया, ढोली भील, डूँगरी भील, डूंगरी गरासिया, मेवाती भील, रावल भील, तडवी भील भगालिया, भिलाला, पावरा, वसावा, वसावे।
5. डामोर, डामरिया।
6. कोकना, कोकनी, कूकना।
7. सेहारिया, सहारिया।
8. धानका, तडबी, वालवी, तेतारिया।
9. गरासिया (राजपूत गरासिया को छोडकर)
10. कोली ढोर, काथोडी, ढोर काश्तकारी, सोन कथोडी, सोन कातकरी।
11. नायकडा, नायका, चोलीवाला, नायका, कापडिया नायका, मोटा नायका, नाना नायका।

मुख्य शब्द : जनगणना, जनसंख्या, अनुसूचित

प्रस्तावना

जनजातियों का सामाजिक विकास का अध्ययन

2011 की जनगणना के अनुसार राज्य में 92.39 लाख 13.48 प्रतिशत आबादी अनुसूचित जनजातियों की है। जनजाति जनंसख्या के आधार पर राज्य का देश में छठा स्थान है। तथा अनुसूचित जनजाति जनसंख्या का राज्य की कुल जनसंख्या से अनुपात के हिसाब से राज्य का देश में 13 वाँ स्थान है। राज्य मे सर्वाधिक जनजाति जनसंख्या उदयपुर में 15.25 लाख व न्यूनतम बीकानेर में मात्र थी। जनजातियों का 95 प्रतिशत भाग ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है।

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में अनुसूचित जनजाति की 122.22 लाख आबादी है जो राज्य की कुल जनसंख्या का 17.83 प्रतिशत है। राज्य में 2001 की जनगणना में अनुसूचित जनजाति का राज्य की कुल जनसंख्या में अनुपात 12.56 प्रतिशत था। जो 2011 में बढकर 13.48 प्रतिशत हो गया है। देश में अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या का सर्वाधिक अनुपात मिजोरम में 94.4 प्रतिशत है जबकि अनुसूचित जाति की संख्या शून्य है।

राजस्थान में जिला स्तर पर अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या का जिले की कुल जनसंख्या से अनुपात (2011 में) सर्वाधिक क्रमशः बाँसवाडा (76.4 प्रतिशत), डूँगरपुर (70.8 प्रतिशत) तथा प्रतापगढ में (55.46 प्रतिशत) था

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-1* September- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

जबकि न्यनतम क्रमशः नागौर (0.30 प्रतिशत) एवं बीकानेर (0.30 प्रतिशत) में था। राज्य में संख्या के लिहाज से अनुसूचित जनजाति की सर्वाधिक आबादी उदयपुर में (15. 25 लाख) निवास करती है।

राजस्थान की अन्य जनजातियों में धानका, कोकना – कोकनी, कोली – ढोर, नायकडा – नायका, पटेलिया, कंजर, सांसी आदि अन्य छोटे समुदाय के लोग भी निवास करते है। महाराणा प्रताप की यशोगाथा बनाने में भील आदिवासियों का योगदान भुलाया नही जा सकता है। मेवाड राज्य की रक्षार्थ किए गए भीलों के इस त्याग एवं स्वामीभक्ति के कारण ही इस राज्य के राज्य चिह्न में चितौड के किले की एक ओर राजपूत राजा और दूसरी और भीलू राजा का चित्र अंकित है।

शोध विधि

प्राथमिक अवलोकन तथा शोध संस्थान में विभिन्न पुस्तकों का उपयोग किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

राजस्थान में पाई जाने वाली जनजातियों की विशिष्ट संस्कृति को जानना।

अनुसूचित जाति एवं जनजाति की जनसंख्या (लाखों में)

विवरण	अनुसूचित जाति		अनुसूचित जनजाति	
	2011	2001	2011	2001
भारत में कुल जनसंख्या	2013.78	1665.76	1042.81	835.61
भारत की जनसंख्या से अनुपात	16-63%	16-22%	8-08%	8-14%
देश में सर्वाधिक आबादी वाला राज्य	उत्तरप्रदेश	उत्तरप्रदेश	मध्यप्रदेश	मध्यप्रदेश
देश में सर्वाधिक अनुपात वाला राज्य	पंजाब	पंजाब	मिजोरम	मिजोरम
राजस्थान में sc/st की कुल जनसंख्या	122.22	96.94	92.39	70.98
राज्य की जनसंख्या से sc/st अनुपात	17.83%	17.16%	13.48%	12.56%
राज्य का अनुपात की दृष्टि से देश में स्थान	8 वां	9 वां	13वां	13वां
राज्य में अनुसूचित जाति/ जनजाति की सर्वाधिक आबादी वाले जिले।	1. जयपुर 2.गंगानगर	जयपुर 7.78 गंगानगर 6.03	उदयपुर 15.25 बाँसवाडा 13.73	उदयपुर 12.60 लाख बाँसवाडा 10.85
अनु. जाति/ जनजाति का सर्वाधिक अनुपात(प्रतिशत) वाले जिले	श्रीगंगानगर (36.6)% हनुमानगढ (27.8)%	श्रीगंगानगर हनुमानगढ	बाँसवाडा (76.4)% डूँगरपुर (70.4)%	बाँसवाडा (72.27)% डूँगरपुर (65.14)%
अनु. जाति/जनजाति की न्यूनतम आबादी वाले जिले	डूँगरपुर प्रतापगढ	डूँगरपुर बांसवाडा	बीकानेर नागौर	बीकानेर नागौर
अनु. जाति/ जनजाति के न्यूनतम अनुपात (प्रतिशत आबादी) वाले जिले।	डूँगरपुर बांसवाडा	डूँगरपुर बांसवाडा	नागौर 0.3% बीकानेर 0.3%	नागौर 0.23% बीकानेर
लिंगानुपात	923		948	

सन् 1951 में प्रदेश में अनुसूचित जाति की आबादी 16.9 लाख (10.58%) तथा अनुसूचित जनजाति की आबादी 3.36 लाख (2.04%) थी जो अब बढ़कर 2011 में क्रमशः 122.22 लाख (17.83%) तथा 92.39 लाख (13.48%) हो गई है।

राजस्थान की भील जनजाति

मीणा जनजाति के बाद भील राज्य की दूसरी सर्वाधिक बडी जनजाति है। भील शब्द द्रविड़ भाषा के ''बील'' का अपभ्रंश है। जिसका अर्थ है। ''तीर कमान''। भीलों का मुख्य अस्त्र तीर कमान ही है। इस प्रकार धनुष – बाण चलाने में प्रवीण होने के कारण ही भील पुत्र कहा है। भील राजस्थान की सबसे प्राचीन जनजाति है। महाभारत में भीलों को निषाद कहा जाता था। वैसे राजस्थान के अधिकांश जिलों में भील आबादी कमोबेश पायी जाती है। परन्तु दक्षिणी राजस्थान के बांसवाडा, डूंगरपुर, उदयपुर, प्रतापगढ एवं सिरोही जिलों में इनका बहुल्य है।

भील समाज में संबंधित प्रमुख विशिष्टताएं अग्र प्रकार है

1. भीलों के घर ''टापरा'' या कू कहलाते है। टापरा के बाहर बने बरामदे ''ढालिया'' कहलाते है।
2. भीलों के गांव का मुखिया ''पालवी/तदवी'' कहलाता है। तथा भीलों के सभी गांवों की पंचायत को मुखिया ''गमेती'' कहलाता है।
3. सामान्यतः भीलों में बाल विवाह प्रचलित नहीं है।
4. विधवा विवाह प्रचलन में है लेकिन छोटे भाई की विधवा को बड़ा भाई अपनी पत्नी नही बना सकता।
5. भीलों में रोगोपचार की विधि डामदेना प्रचलित है।
6. शिकार, वनोपज का विक्रय तथा कृषि इनकी आजीविका के मुख्य साधन है।

पुरूषों के वस्त्र

फेंटा

सिर पर बांधा जाने वाला लाल/पीला/ केसरिया साफा।

पोत्या

सिर पर पहने जाने वाला सफेद साफा।

लंगोटी (खोयतू)

कमर में पहने जाने वाला वस्त्र।

ढेपाडा (ठेपाडा)

पुरूषों द्वारा कमर में घुटनों तक पहने जाने वाली तंग धोती।

अंगरखी बण्डी कमीज, कुर्ता

बदन पर पहनने का वस्त्र।

फालू

कमर रखे जाने वाला अंखोछा।

भील स्त्रियों के वस्त्र

कछावू

स्त्रियों द्वारा घुटनों तक पहना जाने वाला घाघरा।

सिंदूरी

स्त्रियों की लाल रंग की साड़ी।

पिरिया

भील समाज में दुल्हन द्वारा पहने जाने वाला पीले रंग का लहंगा।

परिजनी

भील महिलाओं द्वारा पैरों में पहनने की पीतल की मोटी चूड़िया।

ओढ़नी

स्त्रियों की साडी। तारा मांत की ओढनी आदिवासी महिलाओ की लोकप्रिय ओढ़नी है। ओढ़नी को लूगड़ा भी कहते है।

टोटम

भीलों का कुल देवता भील समुदाय पशु पक्षी एवं पेड पौधों को पवित्र मानते है एवं उनकी टोटम के रूप में पूजा करते है।

फाइरे – फाइरे

भील जनजाति द्वारा शत्रु से निपटने हेतु सामूहिक रूप से किया जाने वाला रणघोष ढोल बजाने या किलकारी मारने पर सभी लोग अपने अस्त्र शस्त्र लेकर फाइरे के घोष के साथ एक स्थान पर इकट्ठे हो जाते है।

भील आदिवासी द्वारा मैदानी भांगों में जलाकर की जाने वाली खेती (झूंमिग खेती) को झूमटी (दजिया) कहते है।

चिमाता

पहाड़ी ढलानों पर की जाने वाली झूमिंग कृषि को भील लोग चिमाता या वालरा कहते है।

भील जनजाति निडर, साहसी, स्वामी भक्त तथा शपथ की पक्की होती है। भील लोग केसरियानाथ जी (कालाबावजी या कालाजी या ऋषभदेव जी) के चढ़ाई गई केसर का पानी पीकर कभी भी झूठ नही बोलते है।

फला

भील घरों का एक मोहल्ला फला कहलाता है।

पाल

भीलों के कई फला का समूह (या गांव) पाल कहलाता है। जैसे नाथरा की पाल। पाल का मुखिया पालवी कहलाता है।

लोकानुरंजन

गैर, ढेंकण, युद्ध नृत्य, द्विचकी नृत्य, घूमरा नृत्य गवरी नृत्य, नेजा आदि भीलों के प्रसिद्ध नृत्य है।

भील समुदाय का खान पान

इनके भोजन में मुख्य रूप से मक्का रोटी तथा प्याज (कांदे) का साग होता है। मक्का उस क्षेत्र में बहुतायत से होती है। भील लोग महुआ की शराब तथा ताड का रस बडे शौक से पीते है।

आजीविका के साधन :

भील समुदाय की आजीविका का प्रमुख साधन कृषि, शिकार एवं वनों से प्राप्त उत्पाद है। ये पहाडी व मैदानी क्षेत्रों में पेड पौधो को साफ कर स्थानांतरित कृषि – वालरा कृषि (झूमिंग कृषि) कहते है।

हाथी मना

विवाह के अवसर पर भील पुरूष द्वारा घुटनों के बल बैठकर तलवार घुमाते हुए किया जाने वाला नृत्य।

हाथी वैण्डो प्रथा

भील समाज में प्रचलित अनूठी वैवाहिक परम्परा जिसमें पवित्र वृक्ष पीपल, साल, बाँस एवं सागवान के पेडों को साक्षी मानकर हरज व लाडी (दूल्हा –दुल्हन) जीवन साथी बन जाते है।

बेणेश्वर मेला

डूंगरपुर में माही, सोम एवं जाखम नदियों के संग पर बेणेश्वर धाम में माघ पूर्णिमा को आयोजित मेला जो आदिवासियों का कुंभ कहलाता है।

भीलों में विवाह की सह पलायन प्रथा विद्यामान है। जिसमें लडके – लड़की भागकर 2–3 दिन बाद वापस आते है। तब गांवो के लोगो द्वारा एकत्रित होकर उनके विवाह को मान्यता प्रदान कर दी जाती है। इसे अपहरण विवाह भी कहते है।

भीलों की भाषा ''बागड़ी या भीली'' कहलाती है। यह भाषा मेवाडी या गुजराती भाषाओं से प्रभावित है।

भीलों में कुटुम्ब प्रथा विद्यमान है। परिवार पितृसत्तात्मक होते है।

घोटिया अम्बा मेला

बांसवाडा के घोटिया अम्बा स्थान पर भरने वाला भीलों का प्रसिद्ध मेला।

गवरी या राई

यह भीलों का प्रसिद्ध लोक नाट्य है जो राखी के दूसरे दिन से प्रारंभ होकर चालीस दिन तक चलता है यह राज्य का सबसे प्राचीन लोक नाट्य है।

गैर नृत्य

फाल्गुन मास में होली के अवसर पर भील पुरूषों द्वारा किया जाने वाला नृत्य। होली भीलों का प्रमुख त्यौहार होता है।

भगत

भील जनजाति में धार्मिक संस्कार सम्पन्न करवाने वाला व्यक्ति ''भगत'' कहलाता है।

मीणा जनजाति

मीणा जनजाति राजस्थान की सबसे बडी जनजाति है। राज्य में इसकी जनसंख्या 2011 में 43.46 लाख (कुल जनजाति आबादी का लगभग 47 प्रतिशत) थी। यह देश की अति प्राचीन जनजाति मानी जाती है। कहा जाता है कि इस जनजाति का गण चिन्ह ''मीन'' (मछली) था। वैदिक काल में यह जनजाति प्रजावत्सल एवं प्रतापी जाति मानी जाती थी। और इसकी वीरता व धीरता का लोहा मानते थे। मुनि मगन सागर ने अपने ग्रंथ मीणा पुराण में मीणा जाति को भगवान मीन का वंशज बताया है। राज्य की सभी जनजातियों में केवल मीणा

जनजाति के लोगों ने ही अपने जनजातिय स्वरूप को भेदकर बाहर आने एवं विकास करने में पहल की है। मीणा जनजाति के लोग मुख्यतः उदयपुर, जयपुर, दौसा, प्रतापगढ, सवाईमाधोपुर, करौली, अलवर बूंदी , टोंक व डूँगरपुर आदि जिलों में निवास करते है। मीणा जनजाति की सर्वाधिक आबादी (1) उदयपुर (2) जयपुर एवं (3) प्रतापगढ जिले में है। मीणाओं का उल्लेख मत्स्य पुराण में मिलता है।

मीणा जनजाति के प्रमुख रूप से दो वर्ग है

जमींदार मीणा

इस वर्ग के लोग कृषि तथा पशुपालन करते है। इनकी आर्थिक स्थिति अपेक्षाकृत अच्छी है।

चौकीदार मीणा

इस वर्ग के लोग राजाओं एवं जमीदारों के महलों एवं कोषागारों की रखवाली करते थे।

आजीविका

मीणा लोगो की आजीविका का प्रमुख साधन कृषि एवं पशुपालन की है। देश की स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सभी जनजातियों में यह जाति सर्वाधिक सम्पन्न एवं शिक्षित हुई है। इस जनजाति की महिलाएं बहुत परिश्रमी, साहसी एवं धैर्यवान होती हैं तथा घरेलू उद्योग धन्धों एवं कृषि दोनो कार्यो में अपने परिवार के पुरूष सदस्यों के साथ बराबर से हाथ बांटती है। मीणा जनजाति मुख्यतः शक्ति की उपासक है। भरतपुर क्षेत्र की मीणा जनजाति दुर्गा पूजक है।

सामाजिक जीवन

1. राजस्थान की मीणा जनजाति में ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी बाल विवाह प्रथा बहुत प्रचलित है।
2. मीणा जनजाति में मृतक के शव को जलाने की प्रथा है मृत्यु के 12 वे दिन सामूहिक भोज (मोसर) किया जाता है।
3. मीणों में शरीर पर गोदने गुदवाने का रिवाज भी है। जो स्त्रियों एवं पुरूषों में समान रूप से प्रचलित है।
4. मीणा समाज में नाता प्रथा भी विद्यमान है। जिसमें एक विवाहित स्त्री अन्य पुरूष के साथ रहने लग जाती है। परन्तु जिस पुरूष से वह नाता करती है उसके पूर्व पति को मुआवजे की रकम (झगडा रकम) देनी होती है। विधवा विवाह को इस समुदाय में सामाजिक मान्यता प्राप्त है।
5. आदिवासी मीणों के जंगलों में बने हुए घर मेवासे कहलाते है।
6. ओबरी : मीणा समाज में अनाज संग्रह हेतु मिट्टी की बनाई गई बडी बडी कोठियां ओबरी कहलाती है।
7. मीणा जनजाति में पंचायत का मुखिया पटेल कहलाता है।
8. मीणा समुदाय के लो देवता बुझ देवता है।
9. मीणा लोग रेवासा (सीकर) में विराजमान जीण माता के उपासक है।
10. मीणा समुदाय में संयुक्त परिवार एवं एकाकी परिवार दोनो प्रथा प्रचलित है।
11. खान पान – मीणा लोगो के भोजन में मक्का, ज्वार,बाजरा, गेहूँ, जौ, प्याज, चटनी, छाछ, दूध, दही खिचड़ी, राबड़ी आदि शामिल होते है। हुक्का पीना भी प्रचलित है।
12. वस्त्राभूषण – पुरूष लोग अंगरखी, धोती, सिर पर पगडी, साफा आदि पहनते है। सर्दी में रेजे का बना पछेवडा ओढ़ लेते है। स्त्रियां ओढनी, घाघरा, कब्जा, कांचली, पहनती है। तथा पैरो में कडे, कमर में कमरबंद, गले में खुगाली, सिर पर पगड़ी आदि पहनती है। पुरूष लोग कान में मुरकी पहनते है।

सहरिया जनजाति

1. सहरिया जनजाति बारां जिले की मध्यप्रदेश की सीमा से लगी तहसीलों शाहबाद और किशनगंज में (राज्य की कुल सहरिया जनसंख्या का लगभग 97 प्रतिशत) अवस्थित है। थोडी संख्या में से कोटा एवं झालावाड में भी है। राजस्थान एवं मध्यप्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रो में रहने वाली सहरिया जनजाति का विस्तार उत्तरी पश्चिमी मध्यप्रदेश के शिवपुरी, मुरैना, ग्वालियर, दतिया एवं गुना जिलों में भी है। राजस्थान में सहरिया जनजाति की कुल आबादी (2011) में 1.11 लाख थी।
2. कतिपय मानवशास्त्री सहरिया शब्द की उत्पति फारसी भाषा के सहर शब्द से मानते है जिसका अर्थ जंगल होता है और ये जंगल में निवास करते है। जंगल से ही इनका निर्वाह होता है।
3. सहराना के बीच में एक छतरीनुमा गोल या चौकोर झौपडी या ढालिया बनाया जाता है। जिसे हथाई या बंगला कहते है यह सहरिया समाज की सामुदायिक सम्पति होती है।

सहरिया समाज की प्रमुख विशेषताएं निम्न है

1. सहरिया शिकार पर निर्भर रहते है और इस कला में पूर्णतः दक्ष है।
2. जंगली फलों व वनोपजों को संग्रह कर अपने काम में लेते है या अनाज के बदले बेच देते है।
3. सहरियों के घर सामान्यतः मिट्टी, पत्थर, बाँस, लकडी और घासफूस के बने होते है। जिन्हे टापरी कहते है।
4. अनाज तथा घरेलू सामान को सुरक्षित रखने के लिए सहरिया परिवार घर के अंदर मिट्टी व गोबर से सुंदर एवं कलात्मक विभिन्न आकारों की कोठिया बनाते है। छोटी कोठी को कुसिला तथा आटा रखने की कोठी को भंडेरी कहा जाता है।
5. घने वनों में निवास करने वाले सहरिया परिवार पेडो पर बल्लियों पर मचाननुमा छोटी झोपडी बनाते है। जिसे ''गोपना'' कोरूआ या टोपा कहते है।
6. गोत्र सहरिया सामाजिक संगठन का एक महत्वपूर्ण आधार है।
7. पिता की मृत्यु पर ज्येष्ठ पुत्र परिवार का मुखिया बनता है।
8. सहरिया समुदाय में दहेज प्रथा प्रचलित है।
9. सहरिया समुदाय में नाता प्रथा प्रचलित है। कोई विवाहित स्त्री अपनी इच्छा से किसी अन्य पुरूष से नाता कर सकती है किन्तु विवाहिता से नाता करने के मामले में नया पति पूर्व पति को झगडा राशि अदा करता है।

10. विधवा विवाह भी प्रचलित है। विधवा स्त्री सामान्यतः अपने देवर के साथ या उसके तैयार नही होने पर समुदाय के किसी अन्य पुरूष के साथ विवाह कर सकती है।
11. सहरिया समुदाय में बच्चों का मुंडन संस्कार करवाने की भी प्रथा प्रचलित है।
12. सहरिया परिवार की कुलदेवी कोडिया देवी है।
13. सहरिया समुदाय में मृतक का श्राद्ध करने की परम्परा नही है।
14. ये लोग काली और दुर्गा के भक्त है और नवरात्रों में नौ दिनो तक काली की पूजा करते है।
15. तेजाजी इनके लोकप्रिय लोकदेवता है जिनका चबूतरा लगभग प्रत्येक सहराने के बाहर देखने को मिल सकता है। भैरव भी सहरिया समुदाय के महत्वपूर्ण लोकदेवता है।
16. ब्रज क्षेत्र भी भांति सहरिया समुदाय में भी लट्ठमार होली की परम्परा प्रचलित है।
17. सहरिया समुदाय में नृत्य के कार्यक्रमों में पुरूष और स्त्री वर्ग एक साथ मिलकर नहीं नाचते है।
18. मकर संक्रांति पर लडकी के डंडो से ''लेंगी'' खेजा जाता है। दीपावली के पर्व पर हीड गाने की परम्परा प्रचलित है। वर्षा ऋतु में लहंगी एव आल्हा गया जाता है।
19. सहरिया लोगों के भोजन में ज्वार, बाजरा, एवं मक्का की प्रमुखता है। विवाह एवं त्यौहारों पर मीठी लापसी, पुवार एवं चूरमा बाटी का भोजन पंसद किया जाता है।
20. वेशभूषा : पुरूष वर्ग अंगरखी, घुटनों तक ऊँची धोती (पंछा), कुर्ता कमीज, साफा,(खपटा) पहनते है और अपने कंधे पर तौलिया धारण करते है। पुरूष कानों में बालियां, गले में ताबीज और चेन तथा हाथों की कलाई में कड़ा पहनते है।

धारी संस्कार

मृत्यु के तीसरे दिन मृतक की अस्थियां व राख एकत्र कर रात्रि में साफ आंगन में बिछाकर ढक देते है एवं दूसरे दिन उसे देखते है। यह मान्यता है कि राख में जिस आकृति के पदचिन्ह बनते है मृतक उसी योनी में पुनर्जन्म लेता है। आकृति देखने के बाद अस्थियों एवं राख को सीताबाडी में स्थित बाणगंगा या कपिलधारा में प्रवाहित कर दिया जाता है। सहरिया समुदाय में इसे धारी संस्कार कहते है।

आजीविका

सहरिया लोगो की आजीविका का प्रमुख साधन कृषि, मजदूरी, बनो से लकड़ी एवं अन्य उपजें एकत्रित करना है। सहरिया समाज में बहु पत्नी प्रथा का प्रचलन है।

गरासिया जनजाति

1. राजस्थान की तीसरी सबसे बडी जनजाति (कुल जनजातियों का 3.4 प्रतिशत) गरासिया जनजाति है। राज्य में इनकी आबादी (2011 में) 3.14 लाख थी।
2. गरासिया जन जाति का बाहुल्य सिरोही जिले की आबूरोड एवं पिंडवाडा तहसील, पाली जिले की बाली तथा उदयपुर जिले के गोगुन्दा तथा कोटडा तहसील में है। आबूरोड का भाखर क्षेत्र गरासियो का मूल प्रदेश माना जाता है। कर्नल जेम्स टॉड ने गरासियों की उत्पति गवास शब्द से मानी है। जिसका अभिप्राय सर्वेन्ट होता है। सर्वाधिक गरासिया सिरोही, उदयपुर एवं पाली जिले में है।
3. अपने विशिष्ट सांस्कृतिक मूल्यों, जीवनयापन के तौर–तरीकों, पुरातन परम्पराओं, अनूठें रीति– रिवाजों, रंग–बिरगें एवं चटकीलें परिधानों, विविध धार्मिक मान्यताओं आदि के कारण यह जनजाति राज्य की अन्य सभी जनजातियों से अपनी अलग पहचान बनाए हुए है।

प्रमुख विशिष्टताएं

1. गरासियों के घर ''घेर'' कहलाते है। गांवो की सबसे छोटी इकाई फालिया कहलाती है।
2. गरासिया लोग अधिक रंग बिरंगें एवं चटकीले वस्त्र पहनने के विशेष शौकीन होते है। सौंदर्य वृद्धि के लिए गोदने गुदवाने की प्रथा है।
3. गरासिया जनजाति की पंचायत के मुखिया को सहलोत या पालवी कहते है।
4. माउण्ट आबू की नक्की झील इनका पवित्र स्थान है जहां ये अपने पूर्वजो का अस्थि विसर्जन करते है।
5. मोर को ये आदर्श पक्षी मानते है।
6. बांसुरी, नगाड़ा, अलगोजा गरासियों के प्रिय वाद्य है।
7. लूर, घूमर, वालर, कूँद, मांदल, गौर, ज्वार नृत्य मोरिय नृत्य आदि गरासियों के मुख्य नृत्य है।
8. गरासिया लोग पूर्णतः प्रकृति जीवी है। इनके निवास कच्चे, घासफूस, बांस बल्ली से युक्त बडे साफ सुथरे तथा स्वच्छ पर्यावरण दर्शित मिलेंगे।
9. गरासिया का मुख्य कार्य कृषि एवं पशुपालन है।
10. गरासिया अनाज का भंडारण कोठियों में करते है जिन्हे सोहरी कहा जाता है।
11. गरासिया समाज मुख्यतः एकाकी परिवार में विभक्त होता है। परिवार पितृसत्तात्मक होते है। पिता परिवार का मुखिया होता है।
12. गरासियों की भाषा गुजराती, भीली, मेवाड़ी, एवं मारवाड़ी का मिश्रण कहा जाता है।
13. भील गरासिया – यदि कोई गरासिया पुरूष किसी भील स्त्री से विवाह कर लेता हो तो ऐसा परिवार को भील गरासिया कहा जाता है।
14. गमेती गरासिया – यदि कोई गरासिया पुरूष किसी भील स्त्री से विवाह कर लेता हो तो ऐसा परिवार गमेती गरासिया परिवार कहा जाता है।
15. सामाजिक परिवेश की दृष्टि से गरासिया 3 वर्गो में विभक्त होते है।

मोटी नियात

ये उच्च वर्ग के होते है जो अपने को बाबोर हाइया कहते है।

नेनकी नियात

ये मध्यम श्रेणी के होते है और माडेरिया कहलाते है।

निचली नियात

ये निम्न श्रेणी के गरासिया है।

16. गरासियों में प्रेम विवाह का बहुत प्रचलन में है।
17. कोंधियां या मेंक : गरासिया समुदाय में मृत्युभोज को इस नाम से पुकारते है।
18. घेण्टी : गरासिया घरों में प्रयुक्त हाथ चक्की।
19. गरासिया लोग शिव, भैरव व दुर्गा के उपासक होते है। इनमें अंधविश्वास व्याप्त है।
20. गरासिया समाज का प्रारंभ आखातीज से होता है।
21. हुरेः : गरासिया समाज में मृतक की याद में बनाया जाने वाला स्मारक।
22. मोतीलाल तेजावत ने भीलों एवं गरासियों में एकी आंदोलन का सूत्रपात कर इन्हे एकता के सूत्र में बांधा।
23. आटा – साटा– आदिवासियों में प्रचलित विवाह प्रथा जिसमें लडकी के बदले में उसी घर की लडकी को बहू के रूप में लेते है।
24. आणा करना (चुनरी ओढाणा) – गरासिया जनजाति में विधवा विवाह करने को आणा/ नातरा करना कहते है।
25. अनाला भोर भू प्रथा – गरासिया जनजाति में विधवा विवाह करने को आणा/नातरा करना कहते है।
26. सेवा विवाह : गरासियों में प्रचलित विवाह जिसमें वर, वधु के घर, घर जवाई बनकर रहता है।
27. खेवणा (माता विवाह) – विवाहित स्त्री द्वारा अपने प्रेमी के साथ भागकर विवाह करना।
28. मेलबो विवाह :– गरासियों में प्रचलित इस विवाह में विवाह खर्च बचाने के उद्देश्य से वधू को वर के घर छोड देते है।
29. कृषि व पशुपालन इनके जीवनयापन का मुख्य आधार है।
30. गरासिया जनजाति अत्यन्त भोली – भांली, ईमानदार, वचन की सच्ची और परिश्रमी होती है।

वेशभूषा एवं आभूषण

1. गरासिया पुरूष एक धोती, एक झूलकी/ पुठियों (कमीज), और सिर पर साफा (फेंटा) बांधता है। हाथो में कडले (कडे) व भाटली, गले में पत्रला अथवा हंसली और कानों में झेले अथवा मूरकी, लूंग, तंगल आदि पहनते है।
2. गरासियां स्त्रिया कांच का जडा हुआ लाल रंग का घाघरा व ओढणी कुर्ता व कांचली प्रमुख रूप से पहनती है। कुंआरी लडकियां लाख की चूडिया पहनती है। व विवाहित स्त्रियां हाथी दांत की चूडिया पहनती है।
3. गरासिया लोगों को वस्त्रों पर कशीदाकारी बहुत पसंद है।
4. हेलरू गरासिया समाज की एक सहकारी संस्था।

कथौड़ी जनजाति

1. राज्य की कुल कथौड़ी आबादी की लगभग 52 प्रतिशत कथौडी लोग उदयपुर जिले की कोटडा, झाडोल, एव सराडा, पंचायत समिति में बसे हुए है। शेष मुख्यतः डूंगरपुर, बांरा एवं झालावाड़ में बसे है। ये महाराष्ट्र के मूल निवासी है। कत्था बनाने में दक्ष होने के कारण वर्षो पूर्व उदयपुर के कत्था व्यवसयियों ने इन्हे यहा लाकर बसाया। कत्था तैयार करने में दक्ष होने के कारण ये कथौडी कहलाएं। राजस्थान में 2011 की जनगणना के अनुसार कथौड़ी जनजाति की कुल आबादी मात्र 4833 है।
2. वर्तमान में वृक्षों की अंधाधुध कटाई व पर्यावरण की दृष्टि से राज्य सरकार द्वारा इस कार्य को प्रति बंधित घोषित कर दिए जाने कथौडी लोगों की आर्थिक स्थिति बडी शोचनीय एवं बदतर हो गयी है। आज य जनजाति समुदाय जगंल से लघु वन उपज जैसे बांस, महुआ, शहद, सफेद मूसली, डोलमा, गोंद, कायेला एकत्र कर और चोरी छुपे लडकियां काटकर बेचने तक सीमित हो गया है।
3. राज्य की अन्य सभी जनजातियों की तुलना में इस जनजाति के लोगो का शैक्षिक एवं आर्थिक जीवन स्तर अत्यधिक निम्न है।

प्रमुख विशेषताएं

1. कथौड़ी जंगलों व पहाड़ों में रहने वाली ऐसी जनजाति है, जो स्वभावतः अस्थायी एवं घुमन्तु जीवन जीती रही है।
2. खेर के जंगलो से कत्था तैयार करने के अलावा मछली पकड़ना, कृषि कार्य करना यह जनजाति अपना गुजर बसर करती है।
3. कथौड़ी लोग घास – पूस, पत्तों एवं बांसों से बने झोपडों, जिन्हे खोलरा कहते है, में रहते है।
4. परिवार आत्म केन्द्रित होते है। व्यक्ति शादी होते ही अपने मूल परिवार से अलग हो जाता है। नाता करना, विवाह विच्छेद एवं विधवा विवाह प्रचलित है।
5. कथौड़ी मांसाहारी भी होते है। दैनिक खानपान में मक्का, ज्वार बंटी आदि की रोटी प्याज आदि के साथ खाते है। चावल उनको प्रिय है पेय पदार्थो में दूध का प्रयोग बिल्कुल नही होता है।
6. स्त्रियां मराठी अंदाज में साडी पहनती है, जिसे फड़का कहते है गहने पहनने का कोई रिवाज नही है।
7. शरीर पर गोदने का महत्व है।
8. इस जनजाति में मावलिया नृत्य एवं होली नृत्य प्रमुख है।
9. मावलिया नृत्य नवरात्रों में पुरूषों द्वारा किया जाता है। इसमें 10–12 पुरूष ढोलक, टापरा एवं बांसली की ताल पर गोल गोल घूमते हुए नाचते है।
10. होली नृत्य में कथौडी स्त्रियां होली के अवसर पर एक दूसरे का हाथ पकडकर नृत्य करती है। नृत्य के दौरान पिरामिड भी बनाती है। पुरूष उनकी संगत में ढोलक, घोरिया, बांसली बजाते है।
11. कथौड़ी जनजाति के लोक वाद्य : इनके वाद्य यंत्रों में गोरिड़िया एवं थालीसर मुख्य है।
12. तारणी : लोकी के एक सिरे पर छेद कर बनाया जाने वाला वाद्य जो महाराष्ट्र के तारपा लोकवाद्य के समान है।
13. घोरिया या खोखरा : बांस से बना वाद्य यंत्र।
14. पावरी : तीन फीट लंबा बांस का बना वाद्य यंत्र। इसे मृत्यु के समय बजाया जाता है।
15. टापरा : बांस से बना लगभग 2 फीट लम्बा वाद्य यंत्र।

16. थालीसर : पीतल की थाली के समान बनाया गया वाद्य यंत्र। इसे देवी देवताओं की स्तुति के समय या मृतक का अंतिम संस्कार के बाद बजाते है।
17. कथौड़ी प्रकृति पर आश्रित हैं वे पुनर्जन्म को पूरी तरह मानते है।
18. कथौड़ी लोगों के प्रमुख परम्परागत देवता डूंगर देव, वाद्य देव, गाम देव, भारी माता, कन्सारी देवी, आदि है। कथौड़ी देवताओं से ज्यादा देवी भक्ति मे विश्वास रखते है।
19. कथौड़ी समाज में मुखिया को नायक कहते है।
20. विवाह में प्रथा व विधिवा पुनर्विवाह प्रचलित है। मृत्युभोज प्रथा भी प्रचलित है।

डामोर जनजाति

डामोर जनजाति मुख्यतः डूंगरपुर, बांसवाडा और उदयपुर जिलों में (गुजरात से लगी सीमा क्षेत्रों में) (राज्य की कुल डामोर आबादी का लगभग 98 प्रतिशत) बसी हुई है। सर्वाधिक डामोर डूंगरपुर जिले में है। जो कुल डामोरों का 61.61 प्रतिशत है। इसके पश्चात बांसवाडा व उदयपुर जिले में क्रमशः सर्वाधिक डामोर रहते है। कुछ डामोर प्रतापगढ, कोटा एवं सिरोही जिलों में भी रहते है। डूंगरपुर जिले की सीमलवाडा पंचायत समिति में सर्वाधिक डामोर है। यह क्षेत्र डामरिया क्षेत्र कहलाता है। डामोर, अपनी उत्पत्ति राजपूतों से मानते है।

1. डामोंरों में एकाकी परिवार में रहने की प्रथा है। पुत्र का विवाह होने के उपरान्त उसके लिए अलग से घर की व्यवस्था कर दी जाती है। माता पिता प्रायः छोटे पुत्र के साथ रहना पसंद करते है।
2. डामोर पुरूष भी महिलाओं के समान गहने पहनने के शौकीन होते है।
3. परिवार का मुखिया पिता होता हैं।
4. नातेदारी प्रथा, तलाक व विधवा विवाह का प्रचलन मिलता है।
5. डामोर गुजरात के प्रवासी होने के कारण स्थानीय भाषा के साथ – साथ गुजराती भाषा का भी प्रयोग करते है।
6. इनका व्यवसाय कृषि है। यह जनजाति कभी भी वनों पर आश्रित नही रही। गुजरात में सामान्यतयाः मैदानी क्षेत्रों में निवास करते है और कृषि के साथ–साथ पशुपालन का कार्य भी करते है।
7. डामोर समुदाय की पंचायत के मुखिया को मुखी कहते है।
8. गांव की सबसे छोटी इकाई फलां कहलाती है।
9. इस जनजाति में विवाह का मुख्य आधार वधू मूल्य होता है। वर पक्ष को लड़की के पिता को वधु मूल्य देना पडता है।
10. पुरूषो में बहु विवाह कर एक से अधिक पत्नी रखने की प्रथा प्रचलित है।

डामोर समुदाय के प्रमुख मेले

(1) पंच महल (गुजरात) में छैला बावजी का मेला।

(2) डूँगरपुर (राजस्थान) में सितम्बर माह में भरने वाला ग्यारस की रैवाडी का मेला।

1. डामोर लोगों को डामरिया भी कहते है।
2. चाडिया : डामोर समाज में होली के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम।

कंजर जनजाति

1. ये मुख्यतः कोटा बूंदी, बांरा, झालावाड, सवाई माधोपुर, उदयपुर, अलवर व अजमेर जिला में पाये जाते है।
2. कंजर जनजाति में मुखिया को पटेल कहा जाता है।
3. कंजर शब्द की उत्पति संस्कृत शब्द काननचार/कानकचार से हुई मानी जाती है, जिसका अर्थ जंगल में विचरण करने वाला होता है।
4. इस जनजाति में चौथमाता, रक्तंदजी माता एवं हनुमान जी को आराध्य देव माना जाता है। चौथ माता का मंदिर – चौथ का बरवाडा (स. माधोपुर) में तथा रंक्तदजी माता का मंदिर संतूर बूंदी में है।
5. हाकम राजा का प्याला कंजर लोग हाकम राजा का प्याला पीकर कभी झूठ नही बोलते। अतः किसी मामले की सफाई जानने हेतु लोग हाकम राजा के प्याले की कसम खाते है।
6. कंजर जनजाति की कुल देवी जोगणिया माता है।
7. कंजर महिलाएं नाचने गाने में कुशल होती है। इनका चकरी नृत्य प्रसिद्ध है।
8. खूसनी कंजर महिलाओं द्वारा कमर में पहना जाने वा वस्त्र। इनका प्रमुख वाद्य ढोलक एवं मजीरा है।

सांसी जनजाति

1. सांसी जनजाति की उत्पति ''सांसमल'' से मानी जाती है।
2. यह जाति मुख्यतः भरतपुर व अजमेर जिले में निवास करती है।
3. इस जाति के लोग खानाबदोश जीवन व्यतीत करते है। छोटी – छोटी हस्तशिल्प के निर्माण से भी आजीविका चलाते है।
4. सांसियों में विधवा विवाह प्रचलित नही। है।
5. कूकडी की रस्म : सांसी जनजाति की एक रस्म जिसके तहत विवाहोपरान्त युवती को अपनी चारित्रिक पवित्रता की परीक्षा देनी होती है।
6. इस जनजाति में नारियल के गोले के आदान प्रदान से सगाई की रस्म पूरी होती है।
7. सांसी जनजाति भाखर बावजी को अपना संरक्षण देवता मानती है।
8. सांसी जनजाति में दो वर्ग है – बीजा व माला।

निष्कर्ष

कहा जा सकता है की विशिष्ट संस्कृति रीति रिवाजों के साथ आधुनिकता का प्रभाव पड रहा है। खुशी सूचकांक से तुलना करने पर इनमें खुशी का स्तर अच्छा पाया गया। विभिन्न सरकारी योजनाओं एवं सरकारी व निजी प्रयासों तथा वैश्वीकरण से जनजातियों का सामाजिक विकास हुआ है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *टॉड ने (1914): एनाल्स एण्ड एक्टीक्यूटीज ऑफ राजस्थान, वॉल्यूम–1, जार्ज रोटलेन एण्ड संस, लंदन।*
2. *राय,एस.सी (1937) : द खरिया रांची : मैन इन इण्डिया ऑफिस, नई दिल्ली, पृ.10*

3. *दवे, पी.सी. (1960):दी गरासिया, भारतीय आदिम जाति सेवक संघ, दिल्ली।*
4. *दयाल एम (1968):द चेनजिंग पैटनर्स ऑफ इंडिया इंटरनेशनल ट्रेडस, इकोनोमिक ज्योग्राफी वोल्यूम 44, पृष्ठ संख्या 240 – 269, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर और दिल्ली।*
5. *मुरदिया बी.एस. (1968) : राजस्थान में ग्रामीण विद्युतीकरण, पीएच.डी. शोध प्रबन्ध, सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर*
6. *Agarwala S.N. (1977) India's populaitopn problem Tata Mc Graw Hill New Delhi*
7. *Kothari CR., (1986) Research Methodolgy. Methods and Techniques willey Estern limited New Delhi.*
8. *Krishan G. (1975) Some aspects population Growth in India pacific view point Vol. 16 PP. 207-210*
9. *Mahadevan K. and P. Krishan (1993) Methodology for population studies and development sage poblication New Delhi.*